ए जो अरवाहें अर्स की, पड़ी रहें तले कदम।
खान पान इनों इतहीं, रूहें रहें तले कदम।। १४४ ।।

यह परमधाम की रूहें हैं। इन्हीं चरणों में इनका ठिकाना है। इनका खाना-पीना, रहना सब चरणों तले है।

याही ठौर रूहें बसत, रात दिन रहें सनकूल।
हक अर्स मोमिन दिल, तिन निमख न पड़े भूल।। १४५ ।।

इन चरणों में ही रात-दिन रूहें आनन्द से रहती हैं। श्री राजजी महाराज का अर्श मोमिन का दिल है। इसमें जरा भी भूलने की बात नहीं है।

हक कदम हक अर्स में, सो अर्स मोमिन का दिल।
छूटे ना अर्स कदम, जो याही की होए मिसल।। १४६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण कमल श्री राजजी महाराज के अर्श, अर्थात् मोमिनों के दिल में हैं, इसलिए मोमिनों के दिल से श्री राजजी महाराज के चरण अलग नहीं होते, क्योंकि मोमिन श्री राजजी महाराज के समान हैं।

ए चरन राखूं दिल में, और ऊपर हैड़े।
लेके फिरों नैनन पर, और सिर पर राखों ए।। १४७ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे सुन्दर चरण कमलों को अपने दिल में, अपने हृदय में, अपने नैनों में अपने सिर पर लेकर घूमूं।

भी राखों बीच नैन के, और नैनों बीच दिल नैन।
भी राखों रूह के नैन में, ज्यों रूह पावे सुख चैन।। १४८ ।।

नैनों के बीच में रखूं और हृदय की आंखों में रखूं। फिर रूह के नैनों में रखूं। जिससे रूह को सुख और करार मिले।

महामत कहे इन चरन को, राखों रूह के अन्तस्करन।
या रूह नैन की पुतली, बीच राखों तिन तारन।। १४९ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि इन चरणों को रूह के अन्तस्करण में बसा लूं या फिर रूह के नैनों की पुतली के तारों में बांध लूं।

।। प्रकरण ।। ९ ।। चौपाई ।। ७९९ ।।

श्री राजजी का सिनगार तीसरा

फेर फेर सरूप जो निरखिए, नैना होंए नहीं तृपित।
मोमिन दिल अर्स कह्या, लिखी ताले ए निसबत।। १ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री राजजी महाराज के स्वरूप को बार-बार देखने पर भी नैनों की प्यास बुझती नहीं। मोमिन श्री राजजी महाराज की अंगना हैं, इसलिए श्री राजजी महाराज उनके दिल को अपना अर्श कर बैठे हैं।

Nijanand App

चाहिए निसदिन हक अर्स में, और इत हक खिलवत।
होए निमख न न्यारे इन दिल, जेती अर्स न्यामत।। २ ।।

श्री राजजी महाराज को रात-दिन मोमिनों के दिल में रहना चाहिए। मोमिनों के दिल में ही परमधाम की कुल न्यामत और खिलवतखाना (मूल-मिलावा) होना चाहिए। इन दिलों से एक पल के लिए अलग न होना चाहिए।

बरनन किया हक सूरत का, रूह देख्या चाहे फेर फेर।
एही अर्स दिल रूह के, बैठे सिनगार कर।। ३ ।।

मेरी रूह ने श्री राजजी महाराज के स्वरूप सिनगार का वर्णन किया है। वह बार-बार इसी स्वरूप को ही देखना चाहती है, जबकि श्री राजजी महाराज सिनगार करके मेरे दिल में ही विराजमान हैं।

अब निस दिन रूह को चाहिए, फेर सब अंग देखे नजर।
सूरत छबि सलूकी, देखों भूखन अंग वस्तर।। ४ ।।

अब मेरी रूह रात-दिन श्री राजजी महाराज के पूर्ण स्वरूप को ही देखना चाहती है। इनके स्वरूप की छबि, सलूकी और अंग के वस्त्र आभूषणों के दर्शन चाहती है।

सिनगार किया सब दुलहे, वस्तर या भूखन।
अब बखत हुआ देखन का, देखों रूह के नैनन।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने वस्त्र और आभूषणों से पूरा सिनगार कर लिया है। अब रूह के नैनों से उनके दर्शन करने का समय है।

सब अंग देखों फेरके, और देखों सब सिनगार।
काम हुआ अपनी रूह का, देख देख जाऊं बलिहार।। ६ ।।

अब फिर से श्री राजजी महाराज के सब अंग और सिनगार को देखूं तो समझ लेना कि अपना काम हो गया। सब इच्छा पूरी हो गई। स्वरूप और सिनगार को देख-देखकर बलिहारी जाती हूं।

रूह चाहे बका सरूप की, करके नेक बरनन।
देखों सोभा सिनगार, पेहेनाए वस्तर भूखन।। ७ ।।

मेरी रूह चाहती है कि ऐसे अखण्ड श्री राजजी महाराज के स्वरूप का वर्णन करके पहने हुए वस्त्र और आभूषणों की शोभा और सिनगार को देखूं।

कलंगी दुगदुगी पगड़ी, देख नीके फेर कर।
बैठ खिलवत बीच में, खोल रूह की नजर।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज के सिर की पाग, कलंगी, दुगदुगी अच्छी तरह से बार-बार देखकर आत्मा के श्री राजजी महाराज के खिलवतखाना (मूल-मिलावा) में बैठकर उनके स्वरूप को देखो।

पेहेले देख पाग सलूकी, माहें कई बिध फूल कटाव।
जोत करी है किन बिध, जानों के नकस नंग जड़ाव।। ९ ।।

हे मेरी आत्मा! तू पहले श्री राजजी महाराज की पाग में बने फूल और तरह-तरह के कटाव से सजी पाग की सलूकी को देख। लगता है यह फूल, कटाव नगों से जड़े हैं जिनकी जोत जगमगा रही है।

Nijanand App

देख कलंगी जोत सलूकी, जेता अर्स अवकास।
सो सारा ही तेज में, पूरन भया प्रकास।। १० ।।

पाग के ऊपर की कलंगी की शोभा और जोत को देखो यह आकाश में पूरे रूप से फैली है।

और खूबी इन कलंगी, और दुगदुगी सलूक।
और पाग छबि रूह देख के, होए जात नहीं भूक भूक।। ११ ।।

इस कलंगी, दुगदुगी की और पाग की शोभा देखकर हे मेरी रूह! तू टुकड़े-टुकड़े क्यों नहीं हो जाती?

देख सुन्दर सरूप धनीय को, ले हिरदे कर हेत।
देख नैन नीके कर, सामी इसारत तोको देत।। १२ ।।

श्री राजजी महाराज के सुन्दर स्वरूप को निहारकर बड़े प्यार से अपने हृदय में बसा लो और अपने नैनों से बड़े प्यार से देखो कि श्री राजजी महाराज कैसे इशारों से तुमको सुख देते हैं।

नैन रसीले रंग भरे, भौं भृकुटी बंकी अति जोर।
भाल तीखी निकसे फूटके, जो मारत खैंच मरोर।। १३ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र रसीले और मस्ती से भरे हैं। उनकी भौंहें तिरछी शोभा देती हैं जिनके अन्दर से श्री राजजी महाराज नेत्रों के बाण चलाते हैं जो रूह के हृदय में चुभते हैं।

हंसत सोभित हरवटी, अंग भूखन कई विवेक।
मुख बीड़ी सोभित पान की, क्यों बरनों रसना एक।। १४ ।।

श्री राजजी महाराज जब हंसते हैं तो उनकी हरवटी तथा अंगों की शोभा और बढ़ जाती है। फिर उनके मुख में पान के बीड़े की शोभा देखकर मेरी जबान में वर्णन करने की शक्ति ही नहीं रह जाती।

लाल रंग मुख अधुर, तंबोल अति सोभाए।
ए लालक हक के मुख की, मेरे मुख कही न जाए।। १५ ।।

श्री राजजी महाराज के होंठ और मुख लाल रंग के हैं, जिसमें पान अधिक शोभा देता है। श्री राजजी महाराज के ऐसी लालिमा लिए मुख की शोभा का वर्णन मेरे मुख से नहीं हो सकता।

गौर मुख अति उज्जल, और जोत अतंत।
ए क्यों रहे रूह छबि देख के, ऐसी हक सूरत।। १६ ।।

श्री राजजी महाराज का मुखारबिन्द, गोरा और उज्ज्वल है, जिसमें बेशुमार तेज की किरणें निकल रही हैं। श्री राजजी महाराज के स्वरूप की ऐसी छबि को देखकर मेरी रूह कैसे रह सकती है?

अति उज्जल मुख निलवट, सुन्दर तिलक दिए।
अति सोभित है नासिका, सब अंग प्रेम पिए।। १७ ।।

श्री राजजी महाराज का मुख उज्ज्वल है और माथे (मस्तक) पर सुन्दर तिलक शोभा देता है। नासिका की शोभा उससे भी और अधिक है। इस तरह से श्री राजजी महाराज के सभी अंग इश्क से भरपूर हैं।

निलवट चौक चारों तरफों, रंग सोभित जोत अपार।
निरख निरख नेत्र रूह के, सब अंग होए करार।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज के मुखारबिन्द के चारों ओर के रंग बेशुमार शोभा देते हैं। जिसे बार-बार देखने पर मेरी रूह को करार आता है।

Nijanand App

देख निलवट तिलक, मुख भौं भासत अति सुन्दर।
सब अंग दृढ़ करके, ले रूह के नैनों अन्दर।। १९ ।।

माथे (मस्तक) के ऊपर का तिलक, मुख और भौंहें सभी बहुत सुन्दर लगते हैं। श्री राजजी महाराज के सभी अंगों को, हे मेरी रूह! निश्चय और दृढ़ता के साथ दिल में बसा लो।

नैन निलवट बंकी छबि, अति चंचल तेज तारे।
रंग भीने अति रस भरे, बका निसबत रूह प्यारे।। २० ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्रों और माथे (मस्तक) की छबि बहुत ही प्यारी लगती है। उनके नैनों के तेज जो मस्ती और आनन्द से भरपूर हैं, अंगनाओं को बहुत प्यारे लगते हैं।

ए रस भरे नैन मासूक के, आसिक छोड़े क्यों कर।
कई कोट गुन कटाख्य में, रूह छोड़ी न जाए नजर।। २१ ।।

श्री राजजी महाराज के ऐसे मस्ती से भरे नेत्रों को आशिक रूहें कैसे छोड़ दें? श्री राजजी महाराज की मद भरी नजर में कई तरह के करोड़ों गुण भरे हैं, जिससे रूह अपनी नजर को हटा नहीं सकती।

जो देवें पल आड़ी मासूक, तो जानों बीच पड़्यो ब्रह्मांड।
रूह अन्तराए सहे ना सरूप की, ए जो दुलहा अर्स अखंड।। २२ ।।

श्री राजजी महाराज की नजर के सामने जब पलक आ जाती है तो ऐसा लगता है जैसे कोई ब्रह्माण्ड बीच में आड़े आ गया होगा। ऐसे अखण्ड परमधाम के दुल्हे का वियोग रूहें सहन नहीं कर सकतीं।

नैन सुख देत जो अलेखे, मीठे मासूक के प्यारे।
मेहेर भरे सुख सागर, रूह तर न सके तारे।। २३ ।।

श्री राजजी महाराज के नेत्र अपनी रूहों को बड़े मीठे, प्यारे सुख देते हैं। वह मेहर के भरे और सुख के सागर हैं, इसलिए रूह की नजर हटाने पर भी नहीं हटती।

मीठे लगें मरोरते, मीठी पांपण लेत चपल।
फिरत अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल।। २४ ।।

श्री राजजी महाराज जब अपने नैनों को मरोड़ते हैं तो रूहों को बहुत अच्छा लगता है। ऊपर से जब पलक को चतुराई से दबाकर देखते हैं तो और अच्छे लगते हैं। जब बड़ी चतुराई से मस्ती के भरे हुए चंचल नुकीले नेत्रों को घुमाते हैं, तो बहुत सुन्दर लगते हैं।

बीड़ी लेत मुख हाथ सों, सोभित कोमल हाथ मुंदरी।
लेत अंगुरियां छबिसों, बलि जाऊं सबे अंगुरी।। २५ ।।

जब श्री राजजी महाराज अपने नर्म हस्त कमल से पान खाते हैं तो हाथ की मुंदरी और उंगलियों की छबि शोभा पाती है। सब उंगलियों पर मैं बलिहारी जाऊं।

बीड़ी मुख आरोगते, अधुर देखत अति लाल।
हंसत हरवटी सोभा सुन्दर, नेत्र मुख मछराल।। २६ ।।

पान की बीड़ी आरोगते समय होंठों की लालिमा और बढ़ जाती है। हंसते समय मस्ती से भरे नैन और हरवटी से मुखारबिन्द की शोभा बेशुमार बढ़ जाती है।

Nijanand App

अधबीच आरोगते, वचन केहेत रसाल।
नैन बान चलावत सेहेजे, छाती छेद निकसत भाल।। २७ ।।

आरोगने के समय बीच में रस भरी वाणी बोलते हैं और नेत्रों के बाण चलाते हैं। वह रूहों की छाती में भाले के समान चुभ जाते हैं।

मोरत पान रंग तंबोल, मानों झलके माहें गाल।
जो नैनों भर देखिए, रूह तबहीं बदले हाल।। २८ ।।

श्री राजजी महाराज जब पान बीड़ा आरोगते हैं तो लगता है मानो उसका लाल रंग गाल पर झलक रहा है। यदि उस समय नजर भर देख लें तो रूह की हालत तुरन्त बदल जाए।

मरकलड़े मुख बोलत, गौर हरवटी हंसत।
नैन श्रवन निलवट नासिका, मानों अंग सबे मुसकत।। २९ ।।

श्री राजजी महाराज मुस्कारते मुख से जब बोलते हैं तो गोरी हरवटी हंसती है और उसके साथ ही आंखें, कान, माथा, नासिका सभी अंग मुस्कराते हैं।

जोत धरत चित्त चाहती, चित्त चाही नरम लगत।
कई रंग करें चित्त चाहती, खुसबोए करत अतंत।। ३० ।।

मुखारबिन्द की लालिमा, कोमलता, खुशबू और कई रंग की शोभा मन की चाहना के अनुसार बन जाती है।

चित्त चाहे सुख देत हैं, लाल मोती कानन।
देख देख जाऊं वारने, ए जो भूखन चेतन।। ३१ ।।

कान के लाल मोती दिल की चाहना अनुसार सुख देते हैं। यह आभूषण चेतन हैं। इन्हें देख-देखकर मैं बलिहारी जाती हूं।

सुपन सरूप जिन बिध के, पेहेनत हैं भूखन।
सो तो अर्स में है नहीं, जो सिनगार करें बिध इन।। ३२ ।।

सपने के झूठे तनों में जिस तरह से आभूषणों का पहनना और उतारना होता है, उस तरह से परमधाम में सिनगार नहीं किया जाता।

नए सिनगार जो कीजिए, उतारिए पुरातन।
नया पुराना पेहेन उतारना, ए होत सुपन के तन।। ३३ ।।

नया सिनगार यदि करना हो तो पुराना उतारना पड़ेगा। नया पहनना और पुराना उतारना संसार के झूठे तनों से होता है।

ए बारीक बातें अर्स की, सो जानें अरवा अरसै के।
नया पुराना घट बढ़, सो कबूं न अर्स में ए।। ३४ ।।

परमधाम की यह बहुत बारीक बातें हैं, जो रूह (मोमिन) ही जानते हैं। परमधाम के अन्दर नया-पुराना और घट-बढ़ कुछ नहीं होता।

Nijanand App

अर्स में सदा एक रस, करें पल में कोट सिनगार।
चित्त चाहे अंगों सब देखत, नया पेहेन्या न जूना उतार।। ३५ ।।

परमधाम सदा एक रस रहता है, परन्तु पल में करोड़ों सिनगार बदल जाते हैं। दिल की इच्छा अनुसार सभी अंग दिखाई देते हैं। वहां नया पहना नहीं जाता। पुराना उतारा नहीं जाता। स्वरूप की ही शोभा बदल जाती है।

ज्यों अंग त्यों वस्तर भूखन, करें कोट रंग चित्त चाहे।
अर्स जूना न कबूं कोई रंग, देखत पल में नित नए।। ३६ ।।

जैसे श्री राजजी महाराज के अंग हैं वैसे ही वस्त्र और आभूषण हैं। जो चित्त के चाहे अनुसार करोड़ों रंग और स्वरूप में बदल जाते हैं। परमधाम में कोई भी रंग पुराना नहीं होता। हर पल नया ही दिखाई देता है।

देत खुसबोए खुसाली, श्रवनों अति सुन्दर।
बात सुनत मेरी रीझत, सुख पावत रूह अन्दर।। ३७ ।।

श्री राजजी महाराज के कान जब मेरी बात को सुनते हैं तो मुझे वह कान बहुत सुन्दर खुशी से भरे और सुगन्धित दिखाई देते हैं, जिसका सुख मेरी रूह अन्दर ही अन्दर समझती है।

जो अटकों इन अंग में, तो जाए न सकों छोड़ कित।
गुझ गुन कई श्रवन के, रूह इतहीं होवे गलित।। ३८ ।।

श्री राजजी महाराज के कान अंग में यदि अटक जाऊं तो छोड़कर आगे नहीं जा सकती। कान में बहुत से गुण छिपे हुए हैं, इसलिए मेरी रूह यहीं गर्क हो जाती है।

जामा अंग जवेर का, भूखन नंग कई रंग।
जोत पोहोंचे आकास में, जाए करत मिनो मिने जंग।। ३९ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो जामा पहना है वह जवेर से जड़ा है। जिसमें आभूषणों के कई नगों के रंग शोभा देते हैं। उनकी किरणें आकाश तक आपस में टकराती हैं।

याही विध जामा पटुका, याही विध पाग वस्तर।
करें चित्त चाहे अंग रोसनी, अनेक जोत अंग धर।। ४० ।।

इस तरह से जामे के ऊपर पटका बंधा है। इसी तरह के कपड़े की सुन्दर पाग है जो मन की चाहना अनुसार अनेक तरह से अंग की शोभा बढ़ाती है।

जामा पटुका चोली बांहेंकी, चीन मोहोरी बन्ध बगल।
ए आसिक अंग देख के, आगूं नजर न सके चल।। ४१ ।।

श्री राजजी महाराज का जामा, पटका, चोली और बाहें, किनारे की चुन्नटें और बगल बन्ध को देखकर आशिक की नजर आगे नहीं जा सकती।

चोली अंग को लग रही, हार लटके अंग हलत।
तले हार बीच दुगदुगी, नेहेरे लेहेरें जोत चलत।। ४२ ।।

जामे की चोली श्री राजजी महाराज के अंग पर चुस्त लगती है (फिट आई है)। जिस पर पहने गले के हार अंग पर हिलते हैं। हारों के बीच दुगदुगी की तरंगें पानी की नहरों के समान चलती हैं।

Nijanand App

बगलों बेली फूल खभे, गिरवान बेली जर।
पीछे कटाव जो कोतकी, रूह छोड़ न सके क्योंए कर।।४३ ।।

बगल में बेलें, फूल शोभा देते हैं तथा जामे के घेरे में भी शोभा देते हैं। पीठ के पीछे जामे पर कोतकी भरत की बनी है, जिसको मेरी रूह किसी तरह से छोड़ नहीं सकती।

कहें हार हम हैड़े पर, अति बिराजे अंग लाग।
सुख देत हक सूरत को, ए कौन हमारो भाग।।४४ ।।

श्री राजजी महाराज के हार कहते हैं कि हम कैसे भाग्यशाली हैं जो श्री राजजी के कलेजे से चिपटकर उनकी शोभा को बढ़ाते हैं।

कण्ठ हार नंग सब चेतन, देख सोभा सब चढ़ती देत।
ए सुख रूह सो जानहीं, जो सामी हक इसारत लेत।।४५ ।।

कण्ठ के हार, नग सब चेतन हैं। सबकी शोभा एक से एक बढ़कर है। इस सुखे का वही रूहें अनुभव करती हैं जो श्री राजजी महाराज के नयनों के सामने रहती हैं।

ए जंग रूह देख्या चाहे, मिल जोतें जोत लरत।
कई नंग रंग अवकास में, मिनों मिने जंग करत।।४६ ।।

श्री राजजी महाराज की और रूहों के सिनगार की किरणें आपस में टकराती हैं, जिसे मेरी रूह देखना चाहती है। सिनगार के कई नगों के रंग आकाश में टकराते हैं।

जोत अति जवेरन की, बांहों पर बाजू बन्ध।
जात चली जोत चीर के, कई विध ऐसी सनन्ध।।४७ ।।

बांहों के ऊपर बाजूबन्ध के जवेरों की जोत आकाश तक चीरती हुई चली जाती है। कुछ इस तरह की शोभा बनी है।

हाथ काड़ों कड़ी पोहोंचियां, जानों ए जोत इनथें अतन्त।
जोत सागर आकास में, कोई सके ना इत अटकत।।४८ ।।

हाथ के कड़े-पोहोंचियों की जोत सबसे अधिक है, जिनकी तरंगें सागर की तरह आकाश में फैलती हैं। कहीं अटकती नहीं।

बाजू बन्ध पोहोंची कड़ी, ए भूखन सोभा अपार।
नरम हाथ लीकें हथेलियां, क्यों आवे सोभा सुमार।।४९ ।।

बाजूबन्ध, पोहोंची और कड़े, आदि के आभूषणों की शोभा बेशुमार है। कोमल हाथों की रेखाओं की शोभा अति अपार है।

जुदे जुदे रंगों जोत चले, ए जो नंग हाथ मुंदरी।
ए तेज लेहेरें कई उठत हैं, ज्यों ज्यों चलवन करें अंगुरी।।५० ।।

हाथ की मुंदरियों के रंगों की किरणें अलग-अलग लहरें ले रही हैं। जैसे-जैसे श्री राजजी महाराज उंगलियां चलाते हैं, वैसे-वैसे तेज की लहरें चलती हैं।

Nijanand App

क्यों कहूं जोत नखन की, ए सबथें अति जोर।
जानों तेज सागर अवकास में, सबको निकसे फोर।।५१ ।।

हाथ के नखों की जोत सबसे तेज है। उसका कैसे वर्णन करें? लगता है इनकी तेज किरणें सागर के समान आकाश में फैली हैं।

रंग देखूं के सलूकी, छबि देखूं के नरम उज्जल।
जो होए कछुए इस्क, तो इतथें न निकसे दिल।।५२ ।।

नखों के रंगों को देखूं, बनावट को देखूं, सलूकी की छवि या कोमलता या उज्ज्वलता को देखूं। यदि दिल में कुछ भी इश्क हो तो यहां से नजर हट नहीं सकती।

कैसी नरम अंगुरियां पतली, देख सलूकी तेज।
आसमान रोसनी पोहोंचाए के, मानों सूर जिमी भरी रेजा रेज।।५३ ।।

उंगलियां कैसी पतली और नरम हैं। इनकी सलूकी और तेज को देखकर लगता है कि जमीन के कण-कण में करोड़ों सूर्य उदय हो गए हैं, ऐसी रोशनी आसमान में फैल जाती है।

जो जोत समूह सरूप की, सो नैनों में न समाए।
जो रूह नैनों में न समावहीं, सो जुबां कह्यो क्यों जाए।।५४ ।।

श्री राजजी महाराज के पूर्ण स्वरूप की जो जोत है उस पर नजर नहीं टिकती और जिस शोभा पर नजर ही नहीं टिकती तो वह जबान से कैसे कही जाए?

यों वस्तर भूखन अंग चेतन, सब लेत आसिक जवाब।
केहे सब का लेऊं पड़-उत्तर, ए नहीं रूह मिने ख्वाब।।५५ ।।

इस तरह से श्री राजजी के वस्त्र, आभूषण, अंग सब चेतन हैं। आशिक रूह इनसे अपनी चाहना की पूर्ति चाहती है, क्योंकि उस समय रूह संसार में नहीं होती, परमधाम में होती है।

रद बदल भूखन सों, और करे वस्तरों सों।
और अंग लग जाए ना सके, फारग न होए इनमों।।५६ ।।

रूह उस समय वस्त्रों और आभूषणों से वार्तालाप करती है। इनसे उसे फुरसत ही नहीं मिलती जिससे दूसरे अंग से बात कर सके।

ए वस्तर भूखन हक के, सो सारे ही चेतन।
सब जवाब लिया चाहिए, आसिक एही लछन।।५७ ।।

श्री राजजी महाराज के सब वस्त्र, आभूषण चेतन हैं। आशिक रूहें इन सबसे जवाब मांगती हैं। रूहों के यह लक्षण हैं।

आसिक रूह जित अटकी, अंग भूखन या वस्तर।
यासों लगी गुफ्तगोए में, सो छूटे नहीं क्योंए कर।।५८ ।।

आशिक की रूह जहां अटक जाती है अंग हो, वस्त्र हो या आभूषण हों। उससे गुझ बातें करने लगती है, इसलिए वह रूह की नजर से किसी तरह भी नहीं छूटते।

Nijanand App

इस्क बसे सब अंग में, सब बिध देत हैं सुख।
कई सुख हर एक अंग में, सो कह्यो न जाए या मुख।।५९ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग-अंग में इश्क भरा है और वह कई तरह का सुख देते हैं। एक ही अंग में कई तरह के सुख हैं, इसलिए उनका वर्णन इस मुख से नहीं किया जा सकता।

प्रेम लिए सोभा गुन, सब सुख देत पूरन।
या वस्तर या भूखन, सुख जाहेर या बातन।।६० ।।

वस्त्र हों, आभूषण हों या जाहिरी या छिपे सुख हों, सब तरह के गुण शोभा व प्रेम से भरे हैं, जो श्री राजजी महाराज रूहों को देते हैं।

सुख इस्क हक जात के, तिनसे अंग सुखदाए।
बाहेर सुख सब अंग में, ए सुख जुबां कह्यो न जाए।।६१ ।।

हक जात, मोमिन, रूहों के इश्क के सुख से इनके सभी अंग सुखी लगते हैं। बाहर के दिखाई देने वाले अंगों के सुख संसार की जबान से कहे नहीं जाते।

अंग वस्तर या भूखन, सब सुख दिया चाहे।
कई सुख जाहेर कई बातन, सब मिल प्रेम पिलाए।।६२ ।।

अंग के हों, वस्त्र या आभूषण के हों, सुख जाहिरी हो या बातूनी हो सभी प्रेम की मस्ती लेने वाले सुख होते हैं।

इस्क देवें लेवें इस्क, और ऊपर देखावें इस्क।
अर्स इस्क जरे जरा, ए जो सूरत इस्क अंग हक।।६३ ।।

श्री राजजी महाराज इश्क लेते हैं, देते हैं और दिखाते हैं। परमधाम का जर्रा-जर्रा सब इश्क का ही रूप है। श्री राजजी महाराज के अंग तथा स्वरूप सब इश्क के हैं।

एक अंग जिन देख्या होए, सो पल रहे न देखे बिगर।
हुई बेसकी इन सरूप की, रूह अंग न्यारी रहे क्यों कर।।६४ ।।

जिस किसी ने श्री राजजी महाराज का एक भी अंग देख लिया तो वह फिर बिना देखे एक पल भी नहीं रह सकती। अपना धनी जानकर अपने हृदय में वह स्वरूप बसा लेती है। फिर रूह किसी तरह से श्री राजजी महाराज से अलग नहीं होती।

सब अंग दिल में आवते, बेसक आवत सूरत।
हाए हाए रूह रेहेत इत क्यों कर, आए बेसक ए निसबत।।६५ ।।

श्री राजजी के सभी अंग रूह के दिल में आ जाते हैं और उनके स्वरूप में वह गर्क हो जाती है। फिर यह परमधाम की अंगना, हाय! हाय! इस संसार में कैसे रहती है?

चारों जोड़े चरन के, ए जो अर्स भूखन।
ए लिए हिरदे मिने, आवत सरूप पूरन।।६६ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों के चारों आभूषण झांझरी, घुंघरी, कांबी और कड़ला के जोड़े जब रूह अपने हृदय में ले लेती है, तो फिर श्री राजजी महाराज का पूरा स्वरूप भी दिल में आ जाता है।

Nijanand App

जो सोभावत इन चरन को, ए भूखन सब चेतन।
अनेक गुन याके जाहेर, और अलेखे बातन।। ६७ ।।

इन चरणों को जो आभूषण शोभा देते हैं, वह सभी चेतन हैं और उनमें जाहेरी, बातूनी अनेक तरह के बेशुमार गुण हैं।

नंग नरम जोत अतंत, और अतंत खुसबोए।
ए भूखन चरनों सोभित, बानी चित्त चाही बोलत सोए।। ६८ ।।

उनके नगों में कोमलता है, बेशुमार चमक है और अपार खुशबू है। उन आभूषणों में से मनचाहे अनुसार ही आवाज निकलती है। इस तरह से श्री राजजी महाराज के चरणों के आभूषण शोभा देते हैं।

गौर चरन अति सोभित, और सिनगार भूखन सोभित।
ए अंग संग न्यारे न कबहूं, अति बारीक समझन इत।। ६९ ।।

श्री राजजी महाराज के चरण गोरे रंग के हैं, जिन पर आभूषण और सिनगार सब शोभा देता है। यह आभूषण और सिनगार श्री राजजी महाराज के तन से कभी अलग नहीं हैं। यह बारीकी समझने की है।

एही ठौर आसिकन की, अर्स की जो अरवाहें।
सो चरन तली छोड़ें नहीं, पड़ी रहें तले पाए।। ७० ।।

परमधाम की रूहों का ठिकाना श्री राजजी महाराज के चरण ही हैं, इसलिए इन चरणों को रूहें नहीं छोड़तीं, चरणों तले पड़ी रहती हैं।

अर्स रूहें आसिक इनकी, जिन पायो पूरन दाव।
ठौर ना और रूहन को, जाको लगे कलेजे घाव।। ७१ ।।

अर्श की रूहें श्री राजजी के चरणों की ही आशिक हैं और उन्हें यह सुन्दर अवसर मिल गया। अब जिनके कलेजे में घाव लग गए हैं, उन रूहों का चरणों के अतिरिक्त और कहीं ठिकाना नहीं है।

कई रंग नंग वस्तर भूखन, चढ़ी आकास जोत लेहेर।
जो जोत नख चरन की, मानों चीर निकसी नेहेर।। ७२ ।।

चरणों के वस्त्रों, आभूषणों के रंगों और नगों की किरणें आकाश में फैलती हैं। इन सब किरणों के रंगों को चीरता हुआ चरणों के नख का तेज नहर के समान आगे जाता है।

केहेती हों इन जुबांन सों, और सुपन श्रवन नजर।
जो नजरों सूरज ख्वाब के, सो सिफत पोहोंचे क्यों कर।। ७३ ।।

श्री राजजी महाराज के चरणों की शोभा यहां की जबान से देखकर और सुनकर कहती हूं तो फिर संसार के झूठे सूर्य की उपमा अखण्ड चरण कमल को कैसे दी जा सकती है।

कट चीन झलके दावन, बैठ गई अंग पर।
कई रंग नंग इजार में, सो आवत जाहेर नजर।। ७४ ।।

कमर में इजार की चुन्नटें हैं। वह जामे से अंग पर बैठी चमक रही हैं और इजार के नगों के कई रंग जामे में से बाहर से ही दिखाई देते हैं।

Nijanand App

और भूखन जो चरन के, सो अति धरत हैं जोत।
नरम खुसबोए स्वर माधुरी, आसमान जिमी उद्दोत।।७५ ।।

चरणों के आभूषणों का तेज बहुत सुन्दर है। इनमें नरमाई, खुशबू और मधुर स्वर हैं और इनका तेज आकाश तक झलकता है।

पांउं तली नरम उज्जल, लीकें एड़ी लांक लाल।
ए रूह आसिक से क्यों छूटहीं, ए कदम नूर जमाल।।७६ ।।

चरण कमलों की तली का रंग लाल और अति उज्ज्वल है, जिसकी गहराई की रेखाएं और एड़ी बड़ी सुन्दर दिखाई देती हैं। श्री राजजी महाराज के ऐसे चरण कमल आशिक रूहों से कैसे छूटेंगे?

तली हथेली हाथ पांउं की, लाल अति उज्जल।
और बीसों अंगुरियां नरम पतली, नख नरम निरमल।।७७ ।।

पांव की तली और हाथ की हथेलियां लाल और उज्ज्वल हैं और उनकी बीसों उंगलियां नरम और पतली हैं। इनके नाखून नर्म और चमकदार हैं।

काड़े कोमल हाथ पांउं के, फने पीड़ी अंग माफक।
उज्जल अति सोभा लिए, ए सूरत सोभा नित हक।।७८ ।।

हाथ-पांव के जो काड़े हैं अति कोमल हैं। वह पंजे और पिंडली अति सुन्दर हैं और शोभा देती हैं। ऐसी शोभा श्री राजजी महाराज के अंग की सदा बनी रहती है।

रंग रस इंद्री नौतन, चढ़ता अंग नौतन।
तेज जोत सोभा नौतन, नौतन चढ़ता जोवन।।७९ ।।

श्री राजजी महाराज के अंग, इन्द्रियों के रंग, जोत, तेज और चढ़ती हुई जवानी नित्य नई ही दिखाई देती है।

छब फब मुख सनकूल, चढ़ती कला देखाए।
कायम अंग अर्स के, सब चढ़ता नजरों आए।।८० ।।

मुखारबिन्द की छवि, प्रसन्नता नित्य नई-नई दिखाई देती हैं। यह परमधाम के अखण्ड अंग हैं, इसलिए नजर में एक से एक अच्छे दिखाई देते हैं।

ए अंग सब अर्स के, अर्स वस्तर भूखन।
अर्स जरे जवेर को, सिफत न पोहोंचे सुकन।।८१ ।।

यह अंग, वस्त्र, आभूषण और जवेर परमधाम के हैं, जिनकी सिफत को यहां के वचन नहीं लगते।

सब अंग इस्क के, गुन अंग इन्द्री इस्क।
सब्द न पोहोंचे सिफत, इन बिध सूरत हक।।८२ ।।

श्री राजजी महाराज के सभी अंग तथा गुण, अंग, इन्द्रियां इश्क की हैं। ऐसी श्री राजजी महाराज की शोभा है, जिसको यहां के शब्द वर्णन नहीं कर सकते।

Nijanand App

केहे केहे दिल जो केहेत है, ताथें अधिक अधिक अधिक।
सोभा इस्क बका तन की, ए मैं केहे न सकों रंचक।। ८३ ।।

बार-बार जो दिल वर्णन करता है तो उससे शोभा अधिक से अधिक बढ़ती जाती है। यह शोभा अखण्ड परमधाम के तन और इश्क की है, जिसका बयान मैं रंचमात्र भी कर नहीं सकती।

अब लग जानती अर्स के, हेम नंग लेत मिलाए।
पैदास भूखन इन बिध, वे पेहेनत हैं चित्त चाहे।। ८४ ।।

अब तक मैं परमधाम को, सोने और नगों को तथा आभूषणों को संसार से मिलाती थी और सोचती थी वह चित्त में चाहे अनुसार पहनते हैं।

एक ले दूजा मिलावहीं, तब तो घट बढ़ होए।
सो तो अर्स में है नहीं, वाहेदत में नहीं दोए।। ८५ ।।

एक को दूसरे से मिलावें तो घट-बढ़ हो। परमधाम में घट-बढ़ होती नहीं है, क्योंकि वहां कोई दूसरा है ही नहीं। सब श्री राजजी महाराज के अंग की शोभा है।

घड़े जड़े ना समारे, ना सांध मिलाई किन।
दिल चाहे नंगों के असल, वस्तर या भूखन।। ८६ ।।

परमधाम के वस्त्र, आभूषण न तो किसी ने बनाए हैं, न घडे हैं, न जड़े हैं, न संवारे हैं। यह सब वस्त्र, आभूषण दिल चाहे अनुसार नगों के बने हैं।

ना पेहेन्या ना उतारिया, दिल चाह्या सब होत।
जब जित जैसा चाहिए, सो उत आगूं बन्या ले जोत।। ८७ ।।

परमधाम में पहनना, उतारना नहीं होता। दिल के चाहे अनुसार ही सिनगार बदल जाता है। जब जहां जैसी शोभा चाहिए, वह वहां पहले से ही दिखाई देती है।

जो रूह कहावे अर्स की, माहें बका खिलवत।
सो जिन खिन छोड़े सरूप को, कहे उमत को महामत।। ८८ ।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि यदि तुम अपने को परमधाम की रूहें कहलाती हो और तुम्हारी परआतम मूल-मिलावे में बैठी है, तो एक क्षण के लिए श्री राजजी महाराज का स्वरूप नहीं छोड़ना।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ८८७ ।।

श्री सुन्दर साथ को सिनगार

सुन्दर साथ बैठा अचरज सों, जानों एकै अंग हिल मिल।
अंग अंग सब के मिल रहे, सब सोभित हैं एक दिल।। १ ।।

सुन्दरसाथ मूल-मिलावा की हवेली में हिल-मिलकर जैसे एक ही अंग हों, चकित होकर बैठे हैं। सबके अंग से अंग मिले हैं और सबके दिल एक हैं।

जानो मूल मेला सब एक मुख, सब एक सोभित सिनगार।
सागर भर्‍या सब एक रस, माहें कई बिध तरंग अपार।। २ ।।

लगता है परमधाम में सब सखियों का रूप एक है और एक ही सिनगार है। यह सागर के समान एक रस भरा है, जिसमें कई तरह की तरंगें उठ रही हैं।

Nijanand App